

## बछ बारस की व्रत कथा

बछ बारस की कथा अनुसार एक गांव में भीषण अकाल पड़ गया। उस गांव में एक धर्मात्मा साहूकार रहता था। उसने एक तालाब बनवाया था पर उसमें पानी नहीं आया था। साहूकार ने विद्वान् पंडितों से पूछा – कि तालाब में पानी नहीं आने का क्या कारण हैं? इसका कोई उपाय बताइए। तब पंडितों ने कहा कि इसमें एक बालक की बली देनी होगी तब पानी आ जाएगा। साहूकार चिंता में पड़ गया और सोने लगा कि अपना बालक कौन देगा तो साहूकार के दो पोते थे उसने सोचा कि मैं अपने ही एक पोते की बली दे देता हूं इससे गांव में पानी आ जायेगा। परन्तु इस बारे में बहू से कैसे बात करें साहूकार ये सोचने लगा। साहूकार ने बहू को उसके मायके भेज दिया और छोटे पोते को अपने पास रख लिया। बहू पीहर चली गई और पीछे से छोटे पोते की बलि दे दी गई। इसके बाद तालाब लबालब भर गया।

साहूकार ने बड़ा यज्ञ किया। सभी को बुलवाया गया परन्तु उसने बहू को नहीं बुलवाया। जब बहू को पता चला कि उसके ससुराल में यज्ञ हो रहा है तो उसने सोचा कि ज्यादा काम की वजह से शायद ससुराल वाले उसे सूचना देना भूल गए होंगे। बहू ने अपने भाई से कहा कि मुझे मेरे घर छोड़ आइए। बहू ने अपने ससुराल आते ही सास के साथ बछबारस की पूजा की और वह तालाब पर चली गई। साहूकार साहूकरनी मन ही मन बछबारस माता से प्रार्थना करने लगे की हे माता! हमारी लाज रखना। हम बहू को उसका बेटा कहा से देंगे। तालाब और गाय की पूजा कर तालाब का किनारा खंडित कर बोली 'आवो मेरे बेटो लड्डू उठाओ' सासुजी मन ही मन विनती करती रही। फिर तालाब की मिट्टी में लिपटा हुआ बछराज आया हंसराज को भी बुलाया।

पूजा संपन्न कर बहू बोली सासुजी ये सब क्या हैं? तब सासूजी ने बहू को सारी बात बताई और कहा बछबारस माता ने हम सब की लाज रख ली। कहते हैं तभी से बछबारस की पूजा में महिलायें गाय के गोबर से तालाब बनाकर पूजा कर किनारा खण्डित कर उस पर लड्डू रख कर अपने बेटे से उठवाती हैं। हे बछबारस माता जैसे साहूकार साहूकरनी की लाज रखी वैसे ही सबकी रखना।